ARYAVART SHODH VIKAS PATRIKA
RNI TITLED NO. UPBIL04292RNI
REG. NO. UPBIL/2014/66218 **PP. No.- 124-125**

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

भारतीय ग्रामीण महिलाओं का सामाजिक विश्लेषण

डॉ0 रामानन्द मौर्य

असि0 प्रोफेसर–समाजशास्त्र, विन्ध्यवासिनी महाविद्यालय, भरूहना, मीरजापुर (उ0प्र0) भारत

Received-13.11.2024, Revised-20.11.2024, Accepted-25.11.2024 **E-mail : aaryvart2013@gmail.com**

सारांशः कसी देश के विकास के लिए वहाँ का हर परिवार, विकसित, शिक्षित एवं समझदार होना चाहिए /परिवार की उन्नति तभी सम्भव है, जब उस परिवार की महिला जागरूक व गुणवती हो क्योंकि स्त्री वह धूरी है, जिस पर परिवार टिका होता है। जिस तरह किसी गाड़ी को अच्छी तरह चलने के लिए उसके दोनो पहिए एक साथ होने चाहिए एक समान होने चाहिए, पक्षियों का उड़ेने के लिए उसके दोनों पंख एक समान हाने चाहिए, उसी तरह परिवार रूपी गाड़ी को चलाने के लिए महिला एवं पुरुष दोनो का शिक्षित होना आवश्यक है।

कुंजीभूत शब्द– ग्रामीण महिला, सामाजिक विश्लेषण, महिला जागरूकता, परिवार, सुरक्षात्मक दृष्टिकोण, परिवार रूपी गाड़ी

समाज की संरचना में नारी की भूमिका न केवल बच्चों के विकास के लिए उत्तरदायी है, बल्कि वह वैयक्तिक सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, भौगोलिक एवं सुरक्षात्मक दृष्टिकोण से भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है। आज जीवन का ऐसा कोई क्षेत्र नहीं है, जहां महिलाए उत्कृष्ट भूमिका नही निभा रही है। एक ओर जहां शहरी क्षेत्रो में महिलाएं स्कूलो, कालेजो, दफ्तरों कारखानों आदि में पुरुषों के साथ कन्धे से कन्धा मिलाकर देश के विकास के लिए तत्पर है, वहीं दूसरी ओर ग्रामीण महिलाए खेतो खलिहानो तथा अन्य विविध क्षेत्रो में रात–दिन काम करके देश के आर्थिक विकास में अपना बहुमूल्य योगदान दे रही है। देश के इन सब के बावजूद समान में स्त्री–पुरुष से निम्न समझी जाती है। खास कर ग्रामीण महिलाएं और अधिक उपेक्षित है।

देश के विकास में ग्रामीण महिलाओं की भागदारी आवश्यक एवं अनिवार्य मानी जानी चाहिए। भारत में महिलाओं की स्थिति ने पिछले कुछ सदियों में बड़ें बदलाव का सामना किया प्राचीन काल में पुरुषों के साथ बराबरी की स्थिति से लेकर मध्म युगीन काल के निम्न स्तरीय जीवन स्तर साथ ही कई सुधारको द्वारा समान अधिकारों को बढ़ावा दिये जाने तक भारत में महिलाओं का इतिहास काफी गतिशील रहा।

1. प्राचीन काल– जिस समाज में नारी को देवी का दर्जा प्राप्त रहा, वही दूसरी ओर नारी के साथ अत्याचारों की लम्बी कतार दिखाई देती है। वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति समाज में काफी ऊची थी और उन्हें अभिव्यक्ति की पूर्ण स्वतन्ता प्राप्त थी महिलाए धार्मिक कार्यों में पुरुष की तरह भाग लेती थी। पुत्र–पुत्री के पालन पोषण में कोई भेद–भाव नही किया जाता था उपनयन संस्कार और शिक्षा प्राप्त करने की अधिकार भी स्त्रियों को पुरुषो की भाँति समान रूप से प्राप्त था तत्कालीन युग में महिलाए सार्वजनिक क्षत्रे में भाग लेती थी, इससे स्पष्ट होता है, कि वैदिक काल में महिलाओं की स्थिति सम्मान जनक थी। स्त्री तथा पुरुषो में कोई भेद–भाव नहीं पाया जाता था।

2. मध्यकालीन युग– 11वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी के काल को मध्यकाल कहा जा सकता है इस काल को स्त्रियों की स्थिति के लिए काला युग कहा जाता है भारत में राजाओं के आपसी फूट का फायदा मुस्लिम शासको ने उठाया कुछ मुस्लिम बादशाहो ने धर्म परिवर्तन कराया उसी दौरान से महिलाओं के साथ जातीयता शुरु हो गई। इसी का फायदा उठाकर हिन्दू स्मृतिकारों द्वारा मनगढत बातो को धार्मिक स्वीकृति प्रदान की गई। यह भी कहा गया कि स्त्रियों को कभी अकेली नही रहना चाहिए उसे हमेशा किसी न किसी के संरक्षण में रहना चाहिए इस काल से नारी की दशा दयनीय होती चली गई, पर्दा प्रथा द्वारा ने नारी को घर की चारदिवारी की कैद में रहने के लिए मजबूर कर दिया गया और बाल विवाहों का बाहुल्य बढ़ता गया शिक्षा के द्वारा महिलाओं के लिए बन्द कर दिये गये इसके साथ ही साथ सती प्रथा भी अपने शिखर पर पहुंच गयी। इस काल में महिलाओं को घर के काम काज तक ही सीमित कर दिया गया। पतिपरमेश्वर, पति व्रत धर्म, और पति के आदेशों पर महिलाओं को चलने की नैतिकता का कड़ाई से पालन इसी काल में हुआ मध्यकाल में स्त्रियो की स्वतन्त्रता सभी प्रकार से छीन करके उन्हें जन्म से मृत्यु तक पुरुषों के अधीन कर दिया गया।

3. आधुनिक काल– यूरोपीय विद्वानों ने 19वीं सदी में यह महसूस किया कि महिलाएं स्वाभाविक रूप से मासूम और अधिक सच्चरित होती है। अग्रेजी शासन काल के दौरान राजाराम माहे न राय, ईश्वर चन्द्र विद्या सागर, ज्योतिबा फूले आदि, जैसे कई सुधारको ने महिलाओं के उत्थान के लिए लड़ाइयां लड़ी 1829 में गवर्नर जनरल विलियम के वेडिंग बेंटिक 1828–1835 के तहत राजाराम मोहन राय के प्रयास सती प्रथा के उन्मूलन का कारण बना। विधवाओं की स्थिति को सुधारने के लिए ईश्वर चन्द्र विद्या सागर के प्रयासो से विधवा पुनर्विवाह 1856 के रूप में सामने आया इसी प्रकार अनगिनत सुधारवादी संगठनों ने औरतो के बीच शिक्षा प्रसार विधवा पुनर्विवाह, विधवाओं की जीवन दशा सुधारने, वाल विवाह राके ने, महिलाओ को पुरुषो के बराबर लाने, एक विवाह लागू कराने आदि प्रयासो से स्त्रियों के जीवन में परिवर्तन सम्भव हुआ।

4. सुधारवादी आन्दोलन– जब–जब स्वार्थ शोषण एवं अन्याय अपनी पराकाष्ठा पर पहुंच जाता है तब–तब उनके विरूद्ध प्रतिक्रिया की आवश्यकता होती है हिन्दू समाज भी 19वीं शताब्दी के आरम्भ से स्त्री शोषण के विरूद्ध होने वाला आन्दोलन इसी प्रतिक्रिया को स्पष्ट करता ह इसी दौरान विभिन्न समाज सुधार भी हुए, जैसे ब्राह्मसमाज, आर्य समाज, थियोसोफिकल सोसाइटी, सती

अनुरूपी लेखक/ संयुक्त लेखक

I S S N NO. - 2347 – 2944 (Print)
e-I S S N NO.- 2582 – 2454 (Online)
Vol.-18, No.-IV, Issues-34, YEAR-Oct-Dec. 2024

प्रथा निरोधक अधिनियम, बाल विवाह विरोध, स्त्री शिक्षा, स्त्री सम्पत्ती अधिकार आदि विभिन्न प्रयास किये गये जिसके परिणाम स्वरुप महिलाओं की स्थिति में काफी परिवर्तन हो रहा है।

सुझाव –

1. महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए प्रा0 शिक्षा एवं उच्च शिक्षा पर जोर दिया जाना चाहिए।
2. बाल विवाहों पर पूर्ण रूप से रोक लगाया जाय।
3. अन्तरजातीय विवाहों को बढ़ावा दिया जाय।
4. सरकारी योजनाओं में महिलाओं को अधिक से अधिक लाभ दिया जाय।
5. महिलाओं को पूर्ण आजादी दी जाय।

निष्कर्ष– निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि भारतीय संस्कृति के पिछड़ेपन का कारण यह भी है कि भारत में महिलाओं की भागीदारी का सभी क्षेत्रों कम होना तथा महिलाओं को पुरुषों के अधीन रखना जिसके परिणाम स्वरूप देश अधिक विकास नही कर सका विश्व में जब हम अपने आपको देखते है तो विश्व से किस स्थान पर पाते है। इसमें एक कारण यह भी रहा कि भारत में महिलाओं की भागदारी का न होना जिस देश की आधी जनता सक्रिय ही न हो उस देश का विकास कैसे सम्भव हो सकता है। मेरा मानना है कि देश का विकास करना है तो स्त्रियो को सम्पूर्ण क्षेत्रों में बराबरी का दर्जा देना होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. धुरजाति प्रसाद मुखर्जी, सोशियालॉजी ऑफ इंडियन कल्चर, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, पृ0: 19.
2. के. दामोदरन, भारतीय चिंतन परम्परा, पीपुल्स पब्लिशिंग हाऊस, नई दिल्ली,पृ0: 327.
3. रवीन्द्र गासो, गुरु नानक देव जी , अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली, पृ0, 135.
4. पांडुरंग वामन काणे, धर्म का इतिहास, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान,लखनऊ, पृ0, 227.
5. गोस्वामी तुलसीदास, कवितावली, गीताप्रेस, गोरखपुर पृ0 106.
6. रामविलास शर्मा, परम्परा का मूल्यांकन, राजकमल पंकाशन , नईदिल्ली, पृ0, 88.
7. नामवर सिंह, दूसरी परम्परा की खोज, राजकमल पंकाशन , नईदिल्ली पृ0, 80.
8. रामचन्द्र शुक्ल, चिंतामणि, इंडियन प्रस लि. प्रयाग, पृ0 : 46.

*****